

भारतीय चित्रकला में बुद्ध

सारांश

भारतीय शिल्प, वास्तु एवं चित्रकला में प्रत्येक काल के विभिन्न प्रभाव स्पष्ट हैं और उनमें प्रत्येक काल की अपनी विशेषता सन्निहित है। शैशुनाक, नन्द, मौर्य, शुंग, कुषाण इत्यादि काल के प्रभाव सुगमता से पहलचाने जा सकते हैं, किन्तु इन समस्त कालों के अतिरिक्त इन पर जो स्थायी और सार्वभौम प्रभाव पड़ा है, वह बुद्ध का है। बुद्ध के निर्माण के पश्चात् से आज पर्यन्त उक्त प्रभाव कला के क्षेत्र में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है। यदि कहा जाए कि भारतीय चित्र एवं स्थापत्य कला में जीवन, स्पंदन और उत्कृष्टता केवल उनके व्यक्तित्व को लेकर ही प्रतिफलित हो सकी है, अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति की चरम सीमा तक पहुँच सकी है, तो किसी प्रकार की अत्युक्ति न होगी। जहाँ बुद्ध वहाँ कला, जहाँ कला वहाँ बुद्ध। यह एक ऐसा सत्य है जिसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। भारत ही नहीं पड़ोस के अन्य भूमि खण्ड भी इस प्रभाव से बच नहीं पाये हैं। चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, ब्रह्मप्रदेश, सिंहल, पूर्वी ईरान, मध्य एशिया, श्रीलंका आदि घोषित कर रहे हैं कि हमें भी बुद्ध की मृत-वाणी के रस का स्वाद मिला है।



राखी कुमारी

सहायक प्राध्यापिका,
छापा कला विभाग,
कला एवं शिल्प महाविद्यालय,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना

मुख्य शब्द : चैत्य, विहार, गर्भगृह, बज्रासन, चंवर, बोधिसत्व, उत्कृष्टता, व्यष्टि, समष्टि, शंखाद, अन्तर्मुखीन, बहुजनहिताय, हीनयान, महायान, अष्टसाहसिका प्रज्ञापारमिता, मरणोपरान्त, तिर्यकभंगिमा, जातक, अवलोकितेश्वर बोधिसत्व।

प्रस्तावना

भारतीय चित्रकला का इतिहास 727 ई0 पूर्व से आरम्भ होता है। 727 ई0 पूर्व से 277 ई0 पूर्व काल तक हमें भारतीय शिल्प में बुद्ध का कोई स्थान नहीं मिलता। कोई भी चित्र, कोई भी मूर्ति अथवा कोई भी कलाकृति नहीं मिलती जिसका स्वयं बुद्ध, जातक-कथा अथवा बौद्ध सम्प्रदाय से किसी प्रकार का संबंध हो।

भारतीय चित्रकला में बुद्ध का चित्रण बुद्ध के जन्म के बाद उनके बोधिसत्व प्राप्त से माना जाता है। महात्मा बुद्ध का जहाँ तक प्रभाव रहा वहाँ तक उनके प्रभाव से चित्रकला का विकास हुआ। महात्मा बुद्ध के समय चित्रकला का प्रचार इतना अधिक था कि उन्हें अपने शिष्यों को चित्रकला में अधिक ध्यान देने के लिए मना किया। बुद्ध का चित्रकला पर प्रभाव श्रीलंका, जावा, श्याम, ब्रह्मा, नेपाल, खोतान, तिब्बत और चीन की कला पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा। बुद्ध का प्रभाव मूर्ति कला, चित्र कला तथा वास्तु कला पर भी पड़ा।

भागवत तथागत के अनुयायियों में एक वर्ग व्यापारियों एवं धनिकों का भी था, जिसके बौद्धनुशाग की देन हमें तत्कालीन असंख्य विहारों के निर्माण तथा कलापूर्ण भव्य स्तूपों की रचना में भारत के ओर-छोर तक देखने को मिलता है। मध्यप्रदेश में साँची और भरहुत, दक्षिण में अमरावती और नागार्जुनी कोंडा तथा पश्चिम में कार्ले और भज के चैत्यों एवं स्तूपों को इस प्रसंग में उद्धृत किया जा सकता है, चारिकाओं के रूप में भ्रमण करने वाले दया, मतता और करुणा के प्रतीक भिक्षु-भिक्षुणियों के आवास के लिए अशोक जैसे गृहस्थ उपासकों ने इन चैत्यों, स्तूपों तथा विहारों का निर्माण करवाया था।

प्रो0 अविनाश के अनुसार - इस कला शैली का विकास और जन्म बहुत ही स्वभाविक ढंग से हुआ। बौद्ध धर्म विशेष रूप से चित्रात्मक है। आरंभिक समय में बौद्ध धर्म का प्रचार तूलिका के अंकन के आधार पर ही हुआ है और लेख तथा लेखनी का महत्व बाद में आया। जैसे-जैसे जनता में बौद्ध धर्म की ज्ञान की जिज्ञासा बढ़ती गई, वैसे-वैसे ही बौद्ध भिक्षुओं के दल दूर-दूर स्थानों में धर्म प्रचार के लिए गए और उन्होंने भगवान बुद्ध के उपदेशों का प्रचार किया और चित्रकला को इस धर्म के प्रचार का माध्यम बनाया।

बुद्ध के जीवन दर्शन के दो आधार रहे हैं – व्यष्टि और समष्टि। उनका व्यष्टिमय जीवन नितान्त एकाकी धर्मलिपियाँ हैं, जिनके अनुसार बुद्ध असाधारण लक्षणों से युक्त होते हुए भी मनुष्य हैं, देवता नहीं। बुद्ध के जीवन का दूसरा समष्टिमय पक्ष “बहुजनहिताय” पर आधारित है उसमें प्राणिमात्र की कल्याणकामना और प्राणिमात्र की दुःख-निवृत्ति की उच्च भावना समाविष्ट है। इस दूसरी भावना में विश्वसेना के उच्चादर्श विद्यमान हैं। जिनको क्रियारूप में उतारने का कार्य कृपाण और गुप्त राजाओं ने किया; बुद्ध के जीवन दर्शन के इन दो पक्षों में पहली परम्परा का विकास श्रीलंका, बर्मा तथा थाई देश में और दूसरी परम्परा का अनुवर्तन नेपाल, तिब्बत, कोरिया, चीन और जापान आदि देशों में हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध पत्र का उद्देश्य है कि बुद्ध एवं बुद्ध के संबंधित कलाओं का ज्ञान सभी के सम्मुख रखना। किस तरह उस समय कलाकार पत्थरों को काटकर प्रतिमा तैयार करते थे जो अपने आप में बहुत दुर्लभ कार्य हैं।

भगवान बुद्ध के जीवन-दर्शन के उक्त दोनों पक्ष अजन्ता के कला-कृतियों में गुम्फित हैं। उनमें एक ओर जहाँ बुद्ध की अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं, वहाँ दूसरी ओर बहुजनहिताय की कल्याण कामना भी व्याप्त है।

तिब्बती इतिहासकार ‘लामा तारानाथ’ ने बौद्ध चित्रकला की तीन प्रमुख शैलियों के विषय में लिखा है – देव शैली, यक्ष शैली, और नाग शैली।

देव शैली

यह शैली मध्य देशीय केन्द्र मगध में प्रचलित थी। जिसके संस्थापक ‘आचार्य बिम्बिसार’ थे, जो पाँचवीं-छठी शताब्दी में जन्मे थे। इस केन्द्र में उच्चकोटि के कलाकार थे और उनकी शैली देव शैली के समान थी।

यक्ष शैली

यक्ष शैली सम्राट अशोक के काल में प्रचलित थी, जिसका केन्द्र राजपूताना था और इस केन्द्र के मुख्य चित्रकार आचार्य श्रृंगधर थे, जिनका जन्म मारवाड़ में सातवीं शताब्दी में हुआ था। इस केन्द्र के कलाकारों ने यक्ष शैली के आधार पर अपनी शैली का विकास किया।

नाग शैली

नाग शैली प्रसिद्ध आचार्य नागार्जुन के समय तीसरी शताब्दी में रही। इसका केन्द्र बंगा था, जिसका समय सातवीं शताब्दी था।

इन तीन प्रमुख केन्द्रों के अतिरिक्त कश्मीर, नेपाल, बर्मा और दक्षिण भारत आदि में बौद्ध चित्रकला के अनेक केन्द्र थे, जिनका समय छठी शताब्दी से दसवीं शताब्दी था।

भारत में बौद्ध कला की महान विरासत भित्ति चित्रों के रूप में सुरक्षित है। इन भित्ति चित्रों का विस्तार भारत के सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है। साथ ही यह कला भारत के उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त तथा मध्य एशिया के अनेक देशों तक पहुँची।

बौद्ध कला की इस महान थाती का समृद्ध केन्द्र अजन्ता है, जो महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं तथा

समाधिस्थ योगी की भाँति अन्तर्मुखीन रहा है। उनके इस जीवन के परिचायक थेरवाद, बौद्ध धर्म और अशोक की जातक कथाओं पर आधारित है। इन चित्रावलियों में इस काल की आरंभिक और अन्तिम, दोनों चरणों की कला दिखाई पड़ती है। श्रीलंका में सिंगेरिया की गुफाओं में भी इस कला शैली का परिपक्व रूप दिखाई पड़ता है। भारत में बाघ, बादामी, सित्तन्नवासल के चित्रों में अजन्ता के चित्रों की छाप है।

इस प्रकार बौद्धकला की सर्वोत्तम चित्राकृतियों अजन्ता में देखने को मिलती हैं जिनकी विशेषताएँ संसार भर में प्रचलित हैं। चित्रों का मुख्य विषय बुद्ध का वास्तविक जीवन तथा उनके पूर्व जन्म की कथाओं – जातक का चित्रण है।

अजन्ता की सभी गुफाएँ मूर्तिकला, स्थापत्य कला एवं चित्रकला बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। उनमें से कुछ हीनयान मत से तो कुछ महायान मतसे संबंधित हैं। भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना समस्त जीवन बौद्धधर्म के प्रचार में लगाया और मध्यम मार्ग को अपनाया। शुरु में बौद्ध-भिक्षु एकान्त वास करते थे। बाद में भिक्षुओं की संख्या बढ़ने लगी, तब संघ यानी समूह की स्थापना की गई ‘चुल्लवग्ग’ के अनुसार भिक्षुओं को रहने के पाँच प्रकार के निवास थे। उसमें से अन्तिम विहार गुफाएँ थी। मौर्यकाल के पहले बौद्धधर्म कई सम्प्रदायों में बँटा था। इसका कारण आपसी मतभेद था। इसके बावजूद बौद्धधर्म का दूर-दूर तक काफी प्रचार एवं प्रसार हुआ, जिससे इनके अनुयायियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। इसी समय मौर्य सम्राट अशोक का प्रादुर्भाव हुआ, जो कि बौद्धधर्म के विकास की एक महत्वपूर्ण घटना है। सम्राट अशोक ने केवल अपने साम्राज्य का विकास ही नहीं किया था, बल्कि बौद्धधर्म के प्रचार-प्रसार में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। अशोक का बौद्ध धर्म के इतिहास में वही स्थान है, जो ईसाई धर्म के इतिहास में रोमन सम्राट कौस्टैटाइन एवं सेंट पॉल का। अशोक ने बौद्धधर्म के प्रचार के लिए विभिन्न प्रदेशों में अपने प्रचारकों को भेजा था। वे प्रदेश हैं – काश्मीर, गांधार, हिमवंत (हिमालय), उत्तरी कोंकण, महाराष्ट्र, मैसूर, कर्नाटक के अतिरिक्त यवन देश, लंका एवं बर्मा।

ईस्वी सन् के प्रारम्भ में बौद्धधर्म के इतिहास में महायान सम्प्रदाय का जन्म हुआ। ‘अष्टसाहसिका प्रज्ञापारमिता’ के अनुसार महायान का उदय दक्षिणा-पथ में हुआ। उसके बाद प्रारम्भ में गया और उत्तर भारत में फला-फूला।

इससे स्पष्ट है कि ईस्वी प्रथम शताब्दी में महायान को उत्तर भारत में प्रसिद्धि मिल चुकी थी। यह समय कनिष्क के राजप्राप्ति के पहले का है। इस प्रकार गुप्त-वाकाटक काल के प्रारम्भ में महायान मत का प्रभाव सम्पूर्ण भारत पर ही नहीं एशिया के कुछ क्षेत्रों में भी छा गया था और हीनयान मत का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा था। लेकिन पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ था बल्कि इसके अनुयायी कम हो गए थे। लेकिन प्रारम्भ में भगवान बुद्ध का चित्रांकन मानवरूप में नहीं मिलता है। बोधगया, भरहुत, साँची आदि स्थानों पर बुद्ध का चित्रांकन प्रतीक के रूप में ही हुआ है। इससे आम जनता संतुष्ट नहीं थी।

अतः भगवान बुद्ध की प्रतिमा, या चित्रांकन प्रारंभ हो गया। दक्षिण में भगवान बुद्ध के मूर्त रूप प्रमाण अमरावती के शिल्प में देखने को मिलता है। यहाँ भगवान बुद्ध के मानव रूप एवं प्रतीक दोनों का अंकन मिलता है।

अजन्ता की गुफा में इसका स्पष्ट प्रमाण देखने को मिलता है। छः गुफाएँ हीनयान मत से तथा शेष महायान मत से संबंधित हैं। हीनयान विहारों का निर्माण केवल भिक्षुओं को रहने के लिए किया गया था। इसमें पूजा-अर्चना की व्यवस्था नहीं थी, जबकि महायान विहारों में पूजा के लिए बुद्ध और बोधिसत्व मूर्तियों की स्थापना की गई थी। हीनयान विहारों में पत्थर को काटकर सोने के लिए चौकी जैसा बनाया जाता था, जबकि महायान में ऐसी व्यवस्था नहीं थी। उस समय शायद भिक्षुगण सोने के लिए खाट बगैरह का प्रयोग करते होंगे।

अजन्ता की गुफाओं के सर्वेक्षण से हमें यह पता चलता है कि इन गुफाओं का निर्माण कठोर पर्वत को काटकर बनाया गया है। निर्माण के पीछे सबसे बड़ा उद्देश्य रहा होगा, वर्षा ऋतु में बौद्ध भिक्षुओं के रहने एवं उपासना में भिक्षु-निवास एवं पूजा करने के लिए एकत्रित होते थे। इस बात की भी संभावना की जाती है कि भक्त-गण यहाँ उपदेश सुनने एवं पूजा के लिए आते होंगे। कलाकारों ने भिक्षुओं के रहने के स्थान का सुन्दर बनाने के लिए बुद्ध की प्रतिमाएँ बनाकर अथवा दीवालें को चित्रों से सजाया करते होंगे।

अजन्ता के चित्रों को देखने से पता चलता है कि चित्रकारों को व्यापक रूप में विभिन्न विषयों का ज्ञान था। मानव के जन्म से मरणोपरान्त स्थिति का वर्णन उनके दार्शनिक विचारों को उजागर करता है। भिक्षु जहाँ रहते थे, उन विहारों का चित्रण का विषय था दीवारों की सजावट थी। जबकि चैत्य-गुहाओं का अलंकरण भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए तैयार किया गया था। चित्रकारों का एक मात्र उद्देश्य था, अपने उपास्यदेव के जीवन की घटनाओं को प्रदर्शित करना। उससे संबंधित जितने भी विषय उनके सामने आते थे उन सभी का चित्रण भित्तिचित्रों में देखने को मिलता है। चित्रों से यह भी स्पष्ट होता है कि सभी चित्रकार सामाजिक प्राणी थे। समाज से विरक्त होकर भिखु बन गए थे। लेकिन जीवन की भावनाओं को पूरी तरह से त्याग न सके। इसलिए चित्रों में रसमय जीवन एवं श्रृंगार का चित्रण भी देखने को मिलता है।

अजन्ता के चित्र दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित तो करते ही हैं, साथ ही जीवन के विभिन्न पहलुओं की ओर ध्यान दिलाना भित्तिचित्रों का मुख्य उद्देश्य है। चित्रों में कहीं-कहीं धार्मिक माहौल में रस एवं श्रृंगार को भी चित्रित किया गया है। ऐसा करने के पीछे यह उद्देश्य हो सकता है कि भिक्षु भगवान बुद्ध के समस्त जीवन की घटनाओं से परिचित हों। चक्रवर्ती नरेश भिक्षु बनकर प्राणिमात्र की भलाई कर सकते हैं तथा उपदेशों से मोक्ष (निर्वाण) का मार्ग दिखा सकते हैं तो ऐसे आचार्य या देवता को जीवन की क्रियाओं से लाभ उठाना भी चित्रों का लक्ष्य हो सकता है।

अजन्ता के गुफा नं0-1 में विश्व-विश्रुत बोधिसत्व पद्मपणि के चित्र की तुलना ऐंजेलो की कृतियों से की

गई है। बोधिसत्व के शरीर की तिर्यकभंगिमा और मुख पर विद्यमान करुणाद्र भाव देखने योग्य है। बुद्ध के जन्म से मृत्यु तक संबंधित विभिन्न घटनाओं के साथ उनके दार्शनिक एवं आध्यात्मिक घटनाओं का भी चित्रण किया गया है। इसके अलावा मरणासन्न राजकुमारी को भी इसी श्रेणी के अंतर्गत रखा गया है।

कुछ चित्र वर्णात्मक हैं जिसमें बुद्ध की जातक कथाएं या फिर अन्य प्राचीन कथाओं पर आधारित चित्रों को रखा गया है। गुफा नं0-दश में चित्रित 'छदन्त जातक या फिर ब्राह्मण जातक, शिव जातक, मातृपेरु जातक और शरभ जातक आदि आते हैं।' इनमें से बहुत चित्रों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिल चुकी है।

कामसूत्र में चित्रकला के छः अंगों का वर्णन है। अजन्ता के चित्रों में इनका प्रयोग बखूबी किया गया है। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है। अजन्ता के चित्रों में भी रेखा और तूलिका का प्रयोग बहुत ही सहजता व लयबद्धपूर्ण किया गया है, जो कहीं भी भारी या डरी हुई नहीं दिखती है। तूलिका प्रयोग में जादू है, एक गति है, जिसके थोड़ा सा इधर-उधर करने से ही चित्रों के भाव बदल जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर गुफा नम्बर पहली के चित्र 'अवलोकितेश्वर बोधिसत्व चित्र' जिसमें सिद्धार्थ के चेहरे पर एक ही रेखा से दुःख, चिन्ता, शोक का भाव दिखाया गया है। 'वाचस्पति गैरोला' के अनुसार 'भाव' अजन्ता के चित्रों की आत्मा है। इन चित्रों का मुख्य आधार भाव है। जिसमें शांति, करुणा, उल्लास, स्थिरता, सौहार्द, भक्ति आदि को बहुत ही सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है। जैसे - 'मरणासन्न राजकुमारी', 'मार विजय', 'अवलोकितेश्वर' आदि के चित्र।

रंगों का प्रयोग भी चित्रों में बहुत सुन्दर ढंग से किया गया है। एक के बाद दूसरे रंगों का प्रयोग बहुत चतुराई एवं सफाई से किया गया है। भारी रंग भी आँखों में खटकते नहीं हैं। रंगों में ताजगी आज भी मौजूद है। अजन्ता के चित्र नारी प्रधान है। यहाँ नारी को साधारण रूप में चित्रित न करके सैद्धान्तिक रूप में किया गया है। कला-समीक्षक 'ग्लेडस्टोन सालमन' बड़े प्रभावित हुए हैं। उन्होंने लिखा है - कहीं भी नारी को इतनी पूर्ण सहानुभूति व श्रद्धा प्राप्त नहीं हुई है।

अजन्ता में यह प्रतीत होता है कि उसे विशिष्टता के साथ नहीं, बल्कि एक सारतत्व के रूप में निरूपित किया है। वह कोई व्यक्तिगत पात्र नहीं है। वह तो एक नियम है। वह वहाँ एक नारी ही नहीं, अपितु समस्त विश्व के सौन्दर्य का अवतार है।

जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया गया है, अजन्ता के चित्रों में जैसे - भगवान बुद्ध के जन्म - मृत्यु से संबंधित जातक कथाएँ, राजा, रंक, गाँव, नगर, महल, झोपड़ी विभिन्न प्रकार की यात्राओं, जुलूस, पशु-पक्षी, बौने, यक्ष, द्वारपाल, देवदूत, यक्षिणियाँ आदि का चित्रण सौन्दर्यात्मक ढंग से किया गया है। चित्रों में गुप्तकालीन, शृंगकालीन सातवाहन, वाकाटक, संस्कृतियों दृष्टिगत होती हैं। खाली जगहों पर आलेख का प्रयोग किया गया है चित्रों की पुनरावृत्ति भी देखने को मिलती

है। लेकिन उसमें भी अलग-अलग चित्रकारों की अपनी-अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति मौजूद है।

भारतीय कलाकार ने अवलोकितेश्वर की मूर्ति बनाते समय उसकी आत्मा को भी दर्शाया है। इसी कारण दर्शक इस महान विभूति के समक्ष खड़ा होकर महान शक्ति का अनुभव करता है, क्योंकि इस पवित्र मूर्ति से शान्ति त्याग, करुणा की भावना की वर्षा होती है।

कलाकारों ने बुद्ध की प्रतिमायें बनाते समय उसके शरीर को जीर्ण कंकाल दिखाया है। दर्शक इस रूप में भी अन्नदानभूति लेता है, क्योंकि भारतीय कलाकारों ने बुद्ध की मूर्तियों के साथ प्रबुद्धत्व के दर्शन कराने का प्रयास कराया है और उसकी महान आत्मा को चित्रों में व्यक्त किया व दर्शकों को साक्षात् दर्शन करा दिए। यह बौद्ध चित्र भारत को ही नहीं बल्कि विश्व को शान्ति का संदेश देता है।

निष्कर्ष

भारतीय कलाकारों ने जड़ और चेतन दोनों समान प्रेरणा ली, क्योंकि भारतीय वातावरण में दोनों ने आध्यात्मिक जगत की सृष्टि की है। बौद्ध चित्रों में कमल का बड़ा महत्व है। स्वयं अवलोकितेश्वर के हाथ में नील कमल धारण कराया गया है। यही कारण है कि भारतीय बौद्ध चित्रों की महत्ता का ज्ञान विश्व के सभी कलाविद स्वीकार करके अपने को कृतार्थ समझते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. धम्म-चक्र-2017 "बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया" भारतीय शिल्प एवं मूर्तिकला में बुद्ध "जोगेन्द्र सक्सेना" पृ0 सं0-53.
2. भारतीय चित्रकला लेखक 'वाचस्पति गैरोला' संपादक श्रीकृष्ण दास, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ0 सं0-113, 115, 116.
3. भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक अध्ययन 'चमन किरण' राजहंस प्रकाशन मंदिर, मेरठ, पृ0 सं0-25.
4. भारतीय कला समीक्षा - "डॉ० ऋतु जोहरी" मानव संसाधन विकास मंत्रालय (राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी), पृ0 सं0-20.
5. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास "डॉ० रीता प्रताप" मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पृ0 सं0-56, 57.
6. मिथिला की भित्ति चित्रण परम्परा का अनुशीलन (राजा सल्हेस के कथानक चित्रण के विशेष संदर्भ में) शोध प्रबन्ध, शोधार्थी राखी कुमारी, पृ0 सं0-75, 76, 77, 78, 89, 90.